FINAL REPORT OF THE MINOR RESEARCH PROJECT

आदिवासी विमर्श के संदर्भ में समकालीन हिन्दी उपन्यास

(Aadivasi Vimarsh ke Sandharbh Mein Samakaleen Hindi Upanyas)

Project work submitted to
University Grants Commission
In connection with the
Minor Research Project
1840-MRP/14-15/KLMG 009/
UGC-SWRO,DATED 04/02/2015

Submitted by

DR.ANITHA.P.L
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HINDI
MAHARAJA'S COLLEGE
ERNAKULAM - 682 011

हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी अस्मिता के विभिन्न पहलुओं का, उनकी समस्याओं का, रहन-सहन, संस्कृति आदि का वर्णन हुआ है । आधूनिकीकरण , भूमंडलीकरण, औद्योगीकरण और नगरीकरण के फलस्वरूप विस्थापन का दंश झेल रही जनजातियाँ किसी प्रकार अपनी परंपरा व संस्कृति को बचाने केलिए संघर्षरत है। वह ज़्यादा कुछ प्राप्त करना नहीं चाहती, जल,जंगल, ज़मीन से ज़्यादा वे कुछ चाहते नहीं है। अगर चाहते है तो बस इतना कि जो कुछ उनका है वहीं उन्हें वापस कर दिया जाए । जहाँ वह नैसर्गिक जीवन यापन कर सके । इसप्रकार के विविध आयामों का चित्रण समकालीन हिन्दी उपन्यासों में हुआ है । समकालीन उपन्यासकारों ने आदिम जनजातियों के प्रति अपनत्व एवं आत्मीयता रखते हुए संवेदनात्मक धरातल पर इनके जीवन संघर्ष को उभारा है।

भारत में सामाजिक पहचान, प्रातिनिधित्व एवं जनपक्षधर विकास के संघर्ष में आदिवासियों का एक लंबा इतिहास रहा है। देशव्यापी औपनिवेशिक शासन के भीतर रहते हुए भी आदीवासी काफी हद तक स्वायत्त शासन कायम रखने में कामयाब रहे। आदिवासी का अपना प्रजातंत्र तरीका है, लेकिन उस प्रजातंत्र में अब उनका कोई हक नहीं रहा क्यों कि देश के बड़े प्रजातांत्रिकों ने उन लोगें के आधिकार को भी हड़प लिया है। जब तक आदिवासी स्वयं नेतृत्व नहीं संभालता तब तक कोई उनके हित केलिए बोलनेवाला या उनके हित केलिए काम करनेवाला नहीं होगा। आदिवासी को अपने क्षेत्र में कोई विकास या बदलाव लाना है तो उन्हें स्वयं नेतृत्वकारी भूमिका अदाकर अपने विकास का भी संभावनाओं को हर क्षेत्र में तलाशें और अपने हक केलिए उसे लड़ना भी चाहिए।

अपने हक केलिए जूझते विस्थापित आदिवासियों को अगर हम अनदेखा करे तो उनके प्रति ना इनसाफी होगा। पूर्ण रूप से न होने पर भी थोड़ा बहुत उन्हें प्रगति के पथ पर लाने की कोशिश तो करना ज़रूरी है। भारतवासी होने के नाते यह हमारा कर्तव्य भी है। भारत में आदिवासी जनसमूहों का विस्थापन व पलायन तो ऐसे सदियों पहले से ही ज़ारी है परन्तु इधर विकास के नाम पर बरती नई नीतियों के कारण वे केवल अपनी ज़मीनों, जंगलों, संसाधनों व गांवों से ही बेदखल नहीं हुए बल्कि

उनके मूल्यों, नैतिक अवधारणाओं, जीवन शैलियों, भाषाओं एवं संस्कृति से भी उनके विस्थापन की प्रक्रिया तेज़ हो गई। इस विस्थापन में सरकारी हस्तक्षेप व नीतियों के साथ साथ तथाकथित मुख्य धारा के समाज द्वारा उनके संसाधनों पर कब्जा करके उन्हें बेदखल कर देना भी उनके विस्थापन व पलायन का कारण रहा है।

आदिवासी केन्द्रित समकालीन हिन्दी उपन्यास बहुत सारे सवालों का जवाब हमें देते हैं , जैसे आदिवसी की पहचान मिटाने की साजिश बनानेवाला कौन है ? वह क्या चाहता है ? उन्हें आदिवासी की संज्ञा में घोषित करके वह क्या साबित करना चाहता है ? आदिवासी की अपनी संस्कृति, अपनी भाषा , अपना मूलधर्म आदि ज़बरदस्ती उन्हें भुला देने का षड़यन्त्र रचनेवाला कौन है? । लेकिन सवाल और जवाब यहाँ खतम नहीं होते हैं। क्यों कि आज भी समाज में अदिवासियों के खिलाफ बहुत सारे षडयन्त्र और साजिश चल रहे हैं और इन सब बातों से ये निरिह जनता वाकिफ नहीं है। उनके शोषित और पीडित मन का दर्द और पीड़ा कोई देख भी नहीं रहा है। इन लोगों की संस्कृति खत्म हो जाए तो उनकी पहचान भी खत्म हो जाती है। सरकार भी कभी कभी इसकी ओर आँखें मूँद लेती है। हर देश में विकास नीती का लक्ष्य प्रायः यही होता है कि इसके तहत सब को विकास का समान अधिकार मिले लेकिन हमारे देश में आज आज़ादी के बाद के छठे दशक में भी हमारा अनुभव यहा ज़ाहिर करता है कि इस नीति के कुछ लोगों का विकास असंख्य लोगों की कीमत पर हुआ है , खासकर आदिवासियों की कीमत पर।

आदिवासियों के अशिक्षित , सीधे सरल, भावुक और एकतरह से डरपोक होने के कारण उनके गुणावगुणों का फायदा बाहर के लोगों ने समय समय पर उठाया है। स्वच्छ रूप से बहने वाली उनकि ज़िन्दगी में हस्तक्षेप करके उनकी संस्कृति, जाति, कुल, गोत्र, धर्म, भाषा सब कुछ तहस नहस कर दिया है। दुबारा उसे आकार देना उनकेलिए नामुमकिन की बात है। सहारे केलिए हमारी तरफ बढ़ाने वाली उसकी हाथों को हम स्वार्थ रूपी तलवार से काट देता है। क्यों कि दुबारा हाथ बढ़ाने का साहस

उसमें कभी न आए। आदिवासी समाज की इन सारी वास्तविकताओं को लेकर उनके साहित्य लिखे गए हैं। इसमें समकालीन आदिवासी केन्द्रित उपन्यासों का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में यह अध्ययन पीड़ित और शोषित आदिवासियों की दुरवस्था को फिर से एकबार समाज के सामने रखने की कोशिश है।

****